पुरातात्वीक साक्ष्य

① - पुरातत्व को अंग्रेजी में आरक्योलॉजी Archeealagy कहा जाता है। यह यूनानी भाषा के Archaios के और Logos से बना है जिसका अर्थ है पुरातन ज्ञान।

② पुरातत्व वह विज्ञान है जिसके माध्यम से पृथ्वी के गर्भ में छिपी हुई सामग्रीयों की खुदाई कर प्राचीन काल के लोगों के भौतीक जीवन का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। प्राचीन इतिहास के जानकारी के लिए पुरातात्वीक प्रमाणों से बहुत अधिक सहायता मिलती है। ये साधन अत्यंत प्रमाणित है तथा इससे भारतीय इतिहास के अनेक अन्धयुगों (Dark Ages) पर प्रकाश पड़ता है जहां हमारा साहित्यीक स्रोत मौन है वहां हमारी सहायता पुरातात्वीक साक्ष्य करते है।

③ पुरातत्व का महत्व इसी बात से स्पष्ट है कि आज यह एक मात्र इतिहास की साखा न होकर एक स्वतंत्र विषय बन गया है

④ समुद्रगुप्त के दिग्विजय का वर्णन एंव विस्तार का एकमात्र स्रोत प्रयाग प्रसस्ती है। जबकी कलींग राजा खारवेल के जानकारी का एक मात्र स्रोत हाथी गुफा लेख है।

⑤ भारतीय पुरातात्वीक सर्वेक्षण (Archealagical Sarvey of India) की स्थापना 1861 ई० में Alexajender Kanigdham की अध्यक्षता में हुई 1902 ई० Jhan Marshal ने इसे पुनर्गठीत किया गवर्नर जेनरल लार्ड कर्जन ने पुरातत्व पर विशेष ध्यान दिया

नोट :— एलेक्जेण्डर कनींघम को भारतीय पुरातत्व का पिता कहा जाता है

पुरातत्व के अन्तर्गत तीन प्रकार के स्रोत आते है।

Scanned by TapScanner

— A अभिलेख
— B मुद्रा
— C स्मारक

अभिलेख

(1) अभिलेख के अध्ययन को पुरालेख शास्त्र (Apegraphy) कहा जाता है। और इनकी तथा दूसरे पुराने दस्तावेजों की प्राचीन लिपि के अध्ययन को पुरालिपि शास्त्र Paleography कहते है।

(2) प्राचीन भारतीय इतिहास के पुर्ननिमार्ण में अभिलेखों से बहुत अधिक मदद मीलती है अभिलेखो का ऐतिहासिक महत्व साहित्यीक साक्षो से अधिक है।

(3) अभिलेख मुहरोंम (seals) पत्थर स्तम्भो, चट्टानो, ताम्रपत्रों इत्यादि पर मिलते है साथ ही साथ मंदीरो की दिवारे ईटों और मुर्तीयों पर भी मीलते है।

(4) सबसे अधिक अभिलेख मैसुर के मुख्य पुरालेख शास्त्री के कार्यालय में संग्रहीत है।

(5) समग्र देश में प्रारम्भीक अभिलेख पत्थरों पर खुदे मीलते है किन्तु ईसा के प्रारम्भ शताब्दी में इसकाम के लिए ताम्रपत्रों का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। फिर भी पत्थर पर अभिलेख खोदने की परिपाटी दक्षिण भारत में भारी मात्रा में जारी रही।

(6) प्रारम्भीक अभिलेख प्राकृत भाषा के है। जिनकी लिपि ब्राह्मी है और ये ई० पु० तीसरी चौथी सताब्दी के है अभिलेखों में संस्कृत भाषा का प्रयोग ईसा की दुसरी सताब्दी से होने लगा और चौथी सदी में इसका व्यापक प्रयोग होने लगा।

Scanned by TapScanner

नोट ① (i) भारत में संस्कृत का पहला अभिलेख स्वराष्ट्र क्षेत्र के शक शासक रुद्रदामन प्रथम (प्रथम 130 से 150 ई०) का जूनागढ़ का अभिलेख है। (U.P.S.C 2000)

(ii) गुप्त काल के अन्त तक देश की एक लिपि ब्राह्मी रही

(iii) अभिलेखों में प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग 9 वीं दसवीं शताब्दी से होने लगा।

(7) मौर्य, मौर्योत्तर और गुप्तकाल के अधिकांश अभिलेख "कार्पस इन्सक्रिप्शनम इंडिकेरम" नामक ग्रंथ माला में प्रकाशित किए गये है।

(8) भारत का सबसे प्राचीन अभिलेख हड़प्पा सभ्यता का है जो अधिकांशतः मुहरों पर उत्कीर्ण है। दुर्भाग्य वश हड़प्पा लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है विद्वानों की मान्यता है कि हड़प्पा लिपि वर्णात्मक नहीं है बल्कि "भावचित्रात्मक" है यह लिपि लगभग 25 BC के आस पास की है।

(9) भारत के जितने भी प्राचीन अभिलेख है उनमे तिथी नही दिया गया है लेकिन अक्षरों के बनावट के आधार पर उनके काल का निर्धारण मोटा मोटी कर लिया जाता है।

नोट : सबसे प्राचीन अभिलेख एशिया (तुर्की) माइनर के बोगाज़-कोई नामक स्थान से प्राप्त हुए है 50 अभिलेख में इन्द्र, वरुण, मित्र नासत्य (अश्विनी कुमार) नाम के वैदिक देवताओं का उल्लेख है कि ये अभिलेख लगभग 1400BC के है जो वैदिक भाषा में है। बोगाजकोई एशिया माईनर (तुर्की) में पड़ता है इस अभिलेख के द्वारा पता चलता है कि आर्यों की एक शाखा एशिया माईनर में गई थी इसी अभिलेख से ऋग्वैदिक काल के निर्धारण में भी सहायता मिलती है। (U.P.S.C 39 O.P.S.C U.A.S. M.P.S.C.)

(11) यथार्थ रूप से अभिलेख हमें अशोक के शासनकाल से मिलने लगते है।

50

(iii) देवदत्त रामकृष्ण भण्डारकर जैसे एक चोटी के विद्वान ने अशोक का इतिहास अभिलेखों के आधार पर लिखने का प्रयास किया है।

10— (i) भारत का सबसे प्राचीन अभिलेख जिसे पढ़ना
v.v.i. सम्भव हो पाया है वह है अशोक का अभिलेख

(ii) अशोक भारत का पहला महान शासक था जिसने अपने राज्यादेशों को पत्थरों एवं स्तम्भों पर उत्कीर्ण करवाया और सम्पूर्ण साम्राज्य के प्रमुख राज्य मार्गों के किनारे गड़वाया।

(iii) अशोक के शिलालेखों की भाषा प्राकृत है और उसकी लिपि ब्राह्मी है।

(iv) लेकिन पश्चिमोत्तर भारत में पाये गये अशोक के अभिलेखों की लिपि खरोष्ठी है। खरोष्ठी लिपि फारसी की तरह दाएं से बायीं ओर लिखी जाती है।

नोट—: पाकिस्तान एवं अफगानीस्तान में पाये गए अशोक अभिलेखों में भाषा की लिपि यूनानी एवं अरमाईक भी है

(v) तुगलक शासक फिरोज शाह तुगलक (1351 to 1388 ई०) को अशोक का दो स्तम्भ लेख सर्वप्रथम प्राप्त हुआ पहला मेरठ से तथा दूसरा हरियाणा के टोपरा नामक स्थान से उसने इन स्तम्भों को दिल्ली मंगवाया और अपने राज्य के पंडितों को पढ़ने के लिए कहा लेकिन किसी को भी पढ़ने में सफलता नहीं मिली

(vi) सर्वप्रथम 1750 ई० में टेलीफेन्थलर ने दिल्ली की दिल्ली में अशोक स्तम्भ की खोज की—

(vii) अशोक के अभिलेख को पढ़ने में सर्वप्रथम सफलता अंग्रेजी ईस्ट इंडिया के अधिकारी जेम्सप्रिंसेप को 1837 में मिली इस प्रकार जेम्स प्रिंसेप द्वारा ही सर्वप्रथम प्राकृत भाषा को पढ़ा जा सका

(viii) अशोक अपने अभिलेखों में अपने नाम की जगह "देवनाम प्रिय" देवताओंका प्रिय या "प्रियदर्शी राजा" शब्द का प्रयोग करता था अब यह समस्या बन गई की देवनाम प्रिय भारत का कौन शासक था और कब भारत में अपने साम्राज्य की स्थापना की थी — देवनाम प्रिय ही मौर्य सम्राट अशोक है इसकी पुष्टी 1915 ई० में श्रीलंका के इतिहास महावंश के आधार पर हुई। इस प्रकार अशोकलेख मौर्य साम्राज्य के बारे में विस्तृत इतिहास लिखना सम्भव हो पाया।

नोट – केवल मास्की (आन्ध्रप्रदेश) एवम् गुर्जरा (मध्यप्रदेश) अभिलेख में अशोक ने अपना नाम अशोक के रूप में उल्लेखित किया है।

(11) अशोक के बाद अभिलेख दो प्रकार के हो जाते हैं — प्रथम राजकीय अभिलेख
द्वितीय – निजी अभिलेख

(12) राजकीय अभिलेख मुख्यत: दरबारी कवियों द्वारा लिखा गया है और यह प्रशस्ती है। जो राजाओं प्रशंसा में लिखा गया है। सभी प्रशस्तीयो में प्रमुख है — समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ती जीसके रचयीता समुद्रगुप्त के दरबारी कवी हरिषेण थे और अन्य प्रमुख अभिलेख निम्नलिखित है

— (i) रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख
(ii) कलिंग राजा खारवेल का हाथी गुफा अभिलेख
(iii) चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल अभिलेख
(iv) राजा भोज का ग्वालियर अभिलेख
(v) मालवा नरेश यशोवर्मन का मन्दसौर अभिलेख
(vi) यवनराजा (राजदूत) हेलियोदोरस का बेसनगर (विदिशा) से प्राप्त गरुड़ स्तम्भ लेख

(13) निजी अभिलेख अधिकतर भूमिदान पत्र के रूप में उपयोग किए गये हैं ये अभिलेख ताम्बे की चादरों पर उत्कीर्ण हैं इन्हीं अभिलेखों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि 600 ई० से 1200 ई० तक भारत में सामन्तवादी परम्परा थी

मुद्रा [Coins] [redacted]

① सिक्को के अध्ययन को मुद्रा शास्त्र [Neumismatics] कहा जाता है।

② हड़प्पा काल में सम्भवतः सिक्को का प्रचलन नहीं था लेकिन कुछ विद्वान हड़प्पा काल से प्राप्त मुहरों के आधार पर यह कहते है कि हड़प्पा काल में सिक्को का प्रचलन था।

नोट :- हड़प्पा काल की मुहरें टेरीकोटा की बनी है। टेरीकोटा (टेराकोटा) पकी हुई मिट्टी को कहते है।

③ वैदिक ग्रंथो मे उल्लेखित सतमान और निष्क को कुछ विद्वानो ने मुद्रा कहा है लेकिन अनुसंधानो के आधार पर यह साबित हो चुका है कि सतमान और निष्क मुद्रा मुद्रा नहीं थे बल्की इससे धातुओ के ढेर का सम्बोधन होता था।

नोट :- वैदिक काल मे व्यापार वस्तु विनिमय प्रणाली Batar System - के आधार पर होता था।

④ आहत सिक्के या पंचमार्क सिक्के [Punch Mark Coins]
6वी शताब्दी ईसा पूर्व में भारत में नगरो की स्थापना हुई जो भारत की द्वितीय नागरिकरण की (भारत का प्रथम नागरीकरण सिन्धु सभ्यता काल मे हुआ था इसी काल में लोहे के कृषि कार्य मे प्रयोग के कारण अधिक प्रगति हुई थी तथा व्यापार एवं वाणिज्य अपने अस्तीत्व में आये थे। अर्थात भारत में जो सिक्के मिले है अर्थात जो सिक्के सबसे पहले मील है इसी काल के है ये धातुओ द्वारा निर्मित है मुख्य रूप से चांदी के बने है बाद में ये चलकर ताम्बे का प्रयोग होने लगा। इन सिक्कों को सम्भवतः महाजन, साहुकार शासकों से पारित किया जाता था ये सिक्के आहत सिक्के कहलाते है इन सिक्को को आहत सिक्के इसलिये कहा जाता है कि क्योंकि छापा मारकर बनाया जाता था। सिक्के जारी करने वाले का नाम एवं तिथी वर्णित नहीं है। इस सिक्के पर पशु पक्षी, पेड़ पौधे, सूर्य, अर्ध चन्द्र इत्यादि का चीत्र अंकित है। और वर्तमान बिहार उत्तर प्रदेश से मिले है।

नोट :- पंचमार्क सिक्के अधिकतर चाँदी के है लेकिन कुछ ताम्बे के भी सिक्के मील है।

Scanned by TapScanner

नोट:— आहत सिक्कों पर मनुष्य का चित्र नहीं है।

नोट:— आहत सिक्कों को देखकर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि भारत में सर्वप्रथम सिक्को का प्रचलन पूर्वी उत्तरप्रदेश एवं बिहार में हुआ था

[5] सर्वप्रथम सिक्के पर लेख लिखने का काल यौवन राजाओं ने किया उन्होंने पश्चिमोत्तर भारत में सर्वप्रथम सोने के सिक्के चलाये

* नोट:— सधारणतया 206 BC से 300 ई० तक के भारतीय इतिहास के जानकारी हमें मुख्य रूप से मुद्रा की सहायता से मीलती है।

* नोट:— इस सन के प्रारम्भ में जो सिक्के जारी किये गये थे उन्हें देखकर स्पष्ट रूप से कह जा सकता है कि यह सिक्का किसी शासक द्वारा पारित किया गया था

[6] सर्वप्रथम शुद्धता की दृष्टी से सोने के सिक्के सर्वप्रथम जारी करने वाले शासक कुषाण थें

(7) सर्व प्रथम बड़े पैमाने पर सोने के सिक्के जारी करने वाले शासक गुप्त थे।

[8] गुप्त काल से सिक्के में कलात्मक कारिगरियां झलकने लगती है समुद्रगुप्त के सिक्के पर "अश्वमेध पराक्रम" लिखा हुआ है कुछ सिक्को पर "उसे विणा बजाते" दिखाया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि समुद्रगुप्त विणा बजाने में निपुण था इसके कुछ सिक्को पर "व्याघ्र पराक्रम" लिखा हुआ है।

* नोट:— सातवाहन नरेश सातकर्णी के एक मुद्रा पर जल पोत का चित्र उत्कीर्ण है। जिससे अनुमान लगाया गया है कि उसने समुद्र विजय की थी। वैसे N.C.E.R.T के अनुसार वह जल यात्रा का शौकीन था।

[9] चन्द्रगुप्त द्वितीय ने चांदी के सिक्के जारी किये थे इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि उसने शको को पराजित किया हो क्योंकि उस समय चांदी के सिक्के सिर्फ पश्चिम भारत में ही मिलते थे।

* नोट:— प्राचीन भारत के में आर्थिक इतिहास को नई दिशा प्रदान करने के उद्देश्य से डा० डी डी कोसाम्बी का आहत मुद्रा का जो अध्ययन किया गया है इसका विशेष महत्व है।

* नोट:— गुप्तोत्तर काल में नगरों का ह्रास व्यापार वाणिज्य का ह्रास तथा सिक्को का ह्रास होता था

Scanned by TapScanner

जोकि गुप्तकाल में हि प्रारम्भ होता था और भारत में सामन्तवाद का उदय होता था।

[10] किसी काल में सिक्के के बहुलता को देखकर यह निष्कर्ष निकालते है कि इस काल में व्यापार वाणिज्य अत्यंत विकसित अवस्था में था सिक्को की कमी को व्यापार वाणिज्य से अवनती का सुचक माना जाता हो सकता है। पूर्व मध्यकाल के प्रथम चरण में सिक्को का अभाव सा है इसी आधार पर यह काल आर्थिक पतन का काल माना गया है। इसके विपरित द्वितीय चरण में सिक्कों के मिल जाने से हम निष्कर्ष निकालते है कि इस समय व्यापार वाणिज्य पुनः उत्थान हुआ जिससे देश आर्थिक दृष्टि से समृध हो गया।

*नोट :— कभी कभी मुद्रा के अध्ययन से हमें सम्राट के धर्म एवं व्यक्तिगत गुणों का पता लग जाता है।

*नोट :— पंचमार्क सिक्के को समकालीन ग्रंथों "कर्षापण" कहकर सम्बोधित किया गया है।

स्मारक

[1] स्मारक के अन्तर्गत प्राचीन इमारते, मंदिर, मुर्तियां इत्यादि आते है। इससे विभिन्न भागों की समकालीक, धार्मिक तथा आर्थिक परिस्थतियों का बोध होता है। इसके अध्ययन से भारतीय कला के विकास के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है। मंदिर एवं स्तुपो से जनता की आध्यात्मिक एवं धार्मिक निष्ठ का भी पता चलता है।

[2] सैन्धव सभ्यता की खुदाइयों से 5000 वर्ष पहले की स्थिती का पता चलता है। सैन्धव काल के इतिहास खुदाइयों पर ही लिखा गया है।

[3] खुदाई के अन्य प्रमुख स्थल है तक्षशिला, मथुरा सारनाथ, पाटलिपुत्र, नालंदा, राजगृह इत्यादि,

[4] अंतरंजीखेरा [उत्तर प्रदेश] यहा की खुदाई से पता चलता है कि लोहे का प्रयोग भारत में 1000 B.C पहले हो गया था।

[5] पांडिचेरी के अरिकमेडु की खुदाई से यह पता चलता है

Scanned by TapScanner

कि ईसा के प्रारम्भिक सदी में दक्षिण भारत एवं रोम के बीच घनिष्ठ व्यापारिक सम्पर्क था।

[6] भारत के अतिरिक्त दक्षिण पूर्व एशिया के अनेक द्वीपों से सम्बन्धित से यह पता चलता है कि भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित स्मारक वहाँ भी मौजूद थे। जैसे जावा (इंडोनेशिया) के बोरोबुदुर से यह पता चलता है कि नवीं सदी में महायान बौद्ध धर्म यहाँ काफी लोकप्रिय था। इसी प्रकार कम्बोडिया अंकोरवाट मंदिर हिन्दू धर्म के लोकप्रियता को दर्शाता है।

[7] प्राचीन काल में भवन एवं मंदिर निर्माण करने की अपनी एक शैली थी लोग उसे उसी के नाम से जानते थे या पुकारते थे जैसे → A नागर शैली → यह उत्तर भारत के भवनों एवं मंदिरों की शैली थी।
B - द्रविड़ शैली → यह दक्षिण भारत के मंदिरों एवं भवनों की शैली थी।
C - वेसर शैली → यह दक्षिण भारत की भवनों एवं मंदिर का शैली है। इस शैली पर द्रविड़ एवं नागर शैली का मिश्रित प्रभाव पड़ा है।

मूर्तिकला

ई० सन के प्रारम्भिक सदी में पश्चिमोत्तर भारत में गंधार क्षेत्र में यूनान एवं रोमवासी और भारतीय कलाकारों का मिलन हुआ इन लोगों ने मूर्ति कला में नयी कला का आविष्कार किया जो गंधार कला से विख्यात है इस काल में बुद्ध के अनेक मूर्तियों का निर्माण हुआ भारत की देशी मूर्ति कला अर्थात "मथुरा कला" मथुरा में फलती फूलती रही दक्षिण भारत की मूर्तिकला 'अमरावती' कला के नाम से जानी जाती है।

A गंधार कला – 50 B.C to 500 A.D → ईसा पूर्व प्रथम सदी के मध्य से उत्तर पश्चिमी भारत में विकसित हुई इस कला के अन्तर्गत जो मूर्तियाँ बनाई गई उसमें सर्वथा अर्थात [पारदर्शी] दिखाने का प्रयास किया गया है गंधार शैली के भारतीय विषयों से यूनानी ढंग से व्यक्त किया गया है

इसपर रोमन कला का भी प्रभाव स्पष्ट है इसका विषय केवल बौद्ध है। और इसी कारण कभी २ इस काल को युनानी बौद्ध (ग्रीको बौद्धिक) इण्डोग्रेक या ग्रीकोरोमन (युनानी रोमीय) काल भी कहा जाता है। इस काल में बुद्ध की जो मुर्तियाँ बनाई गयी है वह युनानी देवता अपोलो से मिलता है।

नोट :— गंधारकला पर सबसे अधिक प्रभाव युनानी कला का है तत्पश्चात रोम कला का है

नोट :— विद्वानों की धारणा है कि सर्वप्रथम गंधार शैली मे ही बुध की मुर्तीया बनायी थी क्योकि यह धारणा अब निपुर्ण सिद्ध हो चुकी है क्योकि सर्वप्रथम बुद्ध की मुर्ति मथुरा कला में बनी थी

नोट :— चुकी इस शैली का विकास पश्चिमोतर भारत के गंधार क्षेत्र में हुआ यही कारण है कि इस शैली का नाम गंधार शैली पड़ा।

3 मथुरा कला → 150 ई० से 300 ई० — मथुरा में भी कला केन्द्र था। इस कला के अर्न्तगत हिन्दु, बौद्ध, एवं जैन मुर्तियां बनायी गई थी। मथुरा कला का चर्मोत्कर्ष कुषाण कला में था क्योकि कुषाण राजाओं का इसे संरक्षण प्राप्त था। मथुरा कला यर्थाथवादी न होकर आदर्शवादी था इसकला मे की मुर्तियों में अध्यात्मिक सुख एवं शान्ति व्यक्त की गयी है।

4) अमरावती कला → 150 ई० 400 ई० सफेद संगमरमर से बनने वाली इस शैली की प्रतिमाओ का विकास दक्षिण भारत में कृष्ण एवं गोदावरी नदियो के मुख्य अमरावती नामक स्थान पर हुआ इस शैली के प्रतिमाओ मे शारीरिक सौंदर्य मानव भावनाओं की अभिव्यक्ति उल्लेखनीय है। सतवाहन राजाओं के संरक्षण मे यह काफी विकसित हुआ

Scanned by TapScanner

★ चित्रकला ★

① भारत की सबसे प्रसिध्द चित्र कला अजन्ता की चित्र कला है। जो पहली सदी ई० में और ईसवन के सातवीं शताब्दी तक बनती रही अजन्ता के चित्रों में मुख्यत: बुद्ध के जीवन के ही चित्रण है हमें यह भी जानकारी है कि गुप्त शासक अजन्ता के चित्रकारो के संरक्षक थे।

Scanned by TapScanner